# अध्याय छप्पनवाँ

## ॥श्री गणेशाय नमः॥ श्री सरस्वत्यै नमः॥ श्री सिद्धारूढ़ाय नमः॥

"आपका पवित्र नाम लेने (जपने) के लिए मुझे अविचल (यानी चंचल न होने वाली) बुद्धि प्रदान कीजिए, मेरे हृदय कमल में रहकर मेरे भव पाश तोड़ दीजिए, आपका नाम जपने से भव पाश टूट जाते हैं, हे गुरुवर्य, आपके प्रेम से मेरा देहभान खो जाने दीजिए (यानी मेरी देह बुद्धि नष्ट होने दीजिए)।"

भक्तों पर अत्यंत दया करने वाले श्रीसिद्धारूढ़ स्वामीजी के चरण स्पर्श करते ही सारे विघ्नों का विनाश होता है। उन्होंने उनके प्रति मेरे हृदय में प्रेम उत्पन्न करके, उस प्रेम से मेरा मन भरकर, उसके उपरांत मेरे हाथ में लेखनी देकर, मुझ पर प्रेम स्रोत बहाकर ग्रंथ लिखवाना प्रारंभ किया। ऐसे दयालु सतगुरुनाथजी ने यह अद्भुत ग्रंथ इस अध्याय में पूर्ण करने की मुझे आज्ञा की है। भक्ति, वैराग्य, ज्ञान तथा सतगुरुजी के प्रति होने वाला गाढ़ प्रेम ये चार चीजे मिलाकर यह ग्रंथ स्वयं सतगुरु महाराज ने लिखा है। लेखनी का क्या महत्व है? मैं स्वयं उनके हाथ की लेखनी हूँ और स्वयं सतगुरु महाराज ने लिखा हुआ होने के कारण, यह मनोहर तथा अर्थपूर्ण ग्रंथ इतनी जल्द पूर्ण हुआ। वर्ना मेरी काबिलियत क्या है? मैं एक जड़, मूढ़, हृदय में प्रेम तथा भक्ति भाव न होने वाला, घर गृहस्थी मे सदैव निमग्न और अविरत अज्ञान स्थिति में रहने वाला साधारण मनुष्य हूँ। मराठी मेरी मातृभाषा नहीं है तथा मैंने मराठी पाठशाला में शिक्षा भी नहीं ली है। फिर भी केवल मुझे निमित्तकारण बनाकर सतगुरुजी ने यह ग्रंथ पूर्ण किया। सतगुरुजी के सारे कार्य अद्भुत हैं, उनमें यह अत्यंत अद्भुत कार्य होकर, यह ग्रंथ उन्होंने मुझ से कैसे लिखवाया यही मुझे आश्चर्यजनक लगता है। अस्तु। दयालु सतगुरुजी ने केवल भक्तों के प्रति होने वाले अत्यंत प्रेम के कारण तथा उन्हें उद्धरने के एकमात्र मक़सद से यह ग्रंथ लिखवाया है। सतगुरुजी स्वयं एक कृपा सागर होकर उसपर प्रेम की लहरें आ रही हैं, जो भी उन लहरों में डभकेंगे, वे सचमुच ही अमर होंगे (यानी मोक्ष प्राप्त करेंगे)। ऐसे महान सतगुरुजी का यह मनोहर जीवन चरित्र, जो सद्भक्तों के लिए अत्यंत पावन है, उसे सुनने से श्रोतागण आनंदित होकर सिद्धजी के कृपा पात्र होंगे। श्रोतागण ने वक्ता से कहा, "आप ने कथन किया सतगुरुजी का

जीवन चरित्र हमने कई दिन लगातार सुना जरूर, परंतु असावधानी के कारण हम उसमें से कुछ हिस्सा भूल चूके हैं।" उनमें से कुछ श्रोताओं ने कहा, "अजी, कुछ सत्य घटनाएँ इतनी मनोहर तथा अर्थ पूर्ण हैं, परंतु हमने वे विस्तार पूर्वक सुनी नहीं, इसलिए वे कथाएँ आप हमें संक्षिप्त रूप से फिर से कथन कीजिए।" श्रोतागणों के वे शब्द सुनकर वक्ता आनंदित होकर बोला, "ठीक है, इस जीवनी का सार संक्षिप्त रूप से बयान करके आप सभी को सुनाता हूँ, उसे ध्यान से सुनिए।"

हे सज्जन श्रोतागण सुनिए। पहले अध्याय में गुरु तथा देवताओं को प्रणाम करके, मोक्ष प्राप्ति के जो चार प्रकार के अधिकारी होते हैं, उनकी पूर्ण जानकारी दी है। दूसरे अध्याय में सिद्धजी का जन्म, उनकी बाल लीलाएँ और खेल तथा उनके जरिये उन्होंने आसान शब्दों में दिया हुआ बोध आदि कथन किए हैं। तीसरे अध्याय में सोम तथा भीम के साथ बाल सिद्ध घर त्यागकर सतगुरुजी की खोज के लिए निकलने के पश्चात, मार्ग में थक जाने के कारण सोम और भीम बाल सिद्ध को छोड़कर घर लौटने का बयान दिया है। चौथे अध्याय में सिद्धजी ने गजदंड गुरुदेव की सेवा करने का, सुब्बय्याशास्त्रीजी को वाद विवाद में हराने का और आखिर गजदंड गुरुजी ने उन्हें "सिद्धारूढ़" नाम देने का वर्णन किया है। पाँचवे अध्याय में सिद्धजी तीर्थयात्रा करते समय चिंतामणी आश्रम पहुँचकर वहाँ वेदांत पर उन्होंने बोध किया हुआ तथा कट्टर ब्राह्मण में ही चांडाल के गुण है यह साबित करके उसे उपासना की विधि का विवरण किया हुआ बयान किया है। छटे अध्याय में सिद्धजी ने पिच्चंडय्या मलयनाथ को ब्रह्म तथा आत्मा की एकरूपता पर स्पष्टीकरण दिया और "तत्वमसि" इस महावाक्य का अर्थ दीक्षित को समझाकर उसके मन में होने वाला संदेह दूर किया हुआ कथन किया है। सातवे अध्याय में सिद्धनाथजी ने गोकर्ण तीर्थ जाकर वहाँ अपनी लीलाव्दारा साधु के मुख से परमात्मा पूजा तथा भोजन स्वीकारता है यह सभी को दिखाने का वर्णन किया है। आठवे अध्याय में सिद्धनाथजी ने न्यायशास्त्र समझने वाले दो पंडितों में छिड़ा वाद विवाद मिटाया, पंचक्रोश-यात्रा पूर्ण की तथा एक साहूकार के घर जाकर उसे बोध किया हुआ कथन किया है। नवे अध्याय में सिद्धजी ने एक बैरागी को बिंब तथा प्रतिबिंब

इन दोनों में संबंध प्रस्थापित करने वाला अर्थपूर्ण विश्लेषण दिया हुआ तथा एक मारवाडी का रोग निवारण करके उसे बचाने का वर्णन किया है। दसवे अध्याय में सिद्धजी ने टोना टोटका जैसे कर्मों का पूर्ण रूप से निषेध करने का उपदेश देकर वैदिक कर्मों का बोध किया हुआ, विजापुर में रहते हुए बहुत दुख झेलने के कारण लोगों का सान्निध्य टालने का वर्णन किया है। ग्यारहवे अध्याय में सिद्धनाथजी ने जंगम का भ्रम दूर किया हुआ तथा सिपाहियों के हाथों से शांति से पिटाई सहते रहने का बयान किया गया है। बारहवे अध्याय में सिद्धारूढ़जी जब हुबली में थे तब दुष्टों ने विविध प्रकार से उन्हें सताने के बावजूद भी उन्होंने असीम शांति प्रकट करने का कथन किया है। तेरहवे अध्याय में सिद्धारूढ़जी को रथ पर बिठाकर रथोत्सव मनाया हुआ, कबीरदास शिष्य होने पर गुरुदेव ने उसे ब्रह्मज्ञान का बोध किया हुआ कथन किया है। कुमठा के हरिहर तथा सरस्वती इस दंपती की शेर से गुरुदेव ने रक्षा करने का और उन्होंने मठ वापस लौटकर गुरुदेव की प्रेम से स्तुति करने का वर्णन चौदहवे अध्याय में किया है। सतगुरुजी ने अचानक प्रकट होकर, रुपकृष्ण तथा भाग्यवती इस जोड़े के पुत्र को प्लेग से मरने से एक ही क्षण में बचाया हुआ पंद्रहवे अध्याय में कथन किया है।

सोलहवे अध्याय में सिद्धजी ने साँप के पाश से छोटे बालक को बचाकर उसके शरीर में समाया हुआ विष नष्ट करने की घटना का वर्णन किया है। चार जंगमों ने मिलकर गुरुदेव की निंदा करने के कारण उनके गले में बंधे हुए शिवलिंग अदृश्य हो गए, वे शिवलिंग सतगुरुजी ने उन्हें वापस लौटाने के पश्चात उन्होंने सतगुरुजी का स्तवन करने की कथा सत्रहवे अध्याय में कथन की है। अठारहवे अध्याय में, पूर्व जन्म में शेर होने वाला परंतु मरते समय सत्संग प्राप्त होने के कारण मनुष्य जन्म मिलकर गुरप्पा के नाम से किस प्रकार जन्मा इसका सुरस वर्णन किया है। बेनकप्पा के सामने भविष्य कथन करने की, उसकी पत्नी की रक्षा करने की तथा जीवप्पा को दृष्टि देने की कहानियों का वर्णन उन्नीसवे अध्याय में किया है। बीसवे अध्याय में, भक्त सातप्पा के शरीर पर उबलता हुआ घी गिरने के कारण, शरीर जलकर वह बेहोश होने के पश्चात सिद्धनाथजी ने उसे पल भर में सचेत करने का वर्णन किया है।

कृष्णाबाई ने सिद्धजी की पूजा करने का निश्चय किया परंतु उसका पति रमानाथ ने मना करने के पश्चात, पूजाघर में स्थित देवदेवताओं की सभी मूर्तियाँ सिद्धारूढ़जी में परिवर्तित हो जाने की कहानी का विवरण इक्कीसवे अध्याय में दिया है। बाईसवे अध्याय में बड़े धूमधाम से मुरकीभावी गाँव में सतगुरुजी के चित्र की पूजा करने के पश्चात, अचानक वहाँ प्रकट होकर सतगुरुजी ने लीला दिखाने का सुरस वर्णन दिया है। तेईसवे अध्याय में सिद्धजी ने रामराय को सपने में प्रकट होकर अभय देकर, भोजन के समय दोनों संतों के बीच में बैठकर भोजन करने की अद्भुत लीला दिखाकर, दोनों संतों के मन में पूज्य हो जाने की कथा का वर्णन किया है। चौबीसवे अध्याय में सिद्धजी ने गुरव्वा को कुँवे में कूदकर प्राण त्यागने से बचाकर, उसे तथा उसके पति को आशिर्वाद देकर धनवान बनाने का विवरण दिया है। बसवण्णा अहंकारी होकर उसने सब कुछ गँवाने के उपरांत सतगुरुजी ने उसे कैदखाने से छुड़ाने की कहानी पच्चीसवे अध्याय में बयान की है। छह मुसलमान युवकों ने सिद्धनाथजी को बिना किसी कारण बहुत पीटने की तथा भक्तों के अनुरोध के कारण सिद्धजी रथ पर सवार होने की घटनाएँ छब्बीसवे अध्याय में दी है। "जल की कमी के कारण समारोह न मनाया जाए," ऐसा सतगुरुजी ने कहने के कारण दुखी हुए भक्तगण मेहनत करने को तैयार हुए देखकर, सतगुरुजी ने मेघविद्या की उपासना करते ही घनघोर वर्षा होने की कथा का वर्णन सत्ताईसवे अध्याय में किया है। "शिवाय नम:" इस मंत्र का गर्जन करके लोगों को प्रात:काल जगाने वाले भक्त को सिपाही पकड़कर ले जाते समय, थानेदार के रूप में आकर सतगुरुजी ने उसे छुड़ाने का विवरण अट्ठाईसवे अध्याय में दिया है। उनतीसवे अध्याय में, मरे हुए शिवप्पा को सतगुरुजी ने जीवित करने की तथा स्वयं ज्वर से पीड़ित होते समय बहुत सारी दवाई की गोलियाँ एकसाथ ही सेवन करने की मनोहर घटनाओं का वर्णन किया है। तीसरी बार दानव्वा प्रसूत होने के पश्चात, उसका शिशु सिद्धारूढ़जी ले जाकर उसे आशिर्वाद देकर दूसरा पुत्र देने का विवरण तीसवे अध्याय में दिया है।

इकतीसवे अध्याय में, शरणप्पा को पेड़ पर चढ़वाकर, वहाँ से वह नीचे गिरते ही, उसे आत्मज्ञान का उपदेश करके सतगुरुजी ने उसे उद्धरने का विवरण

दिया है। बत्तीसवे अध्याय में, सिद्धारूढ़जी एक महात्मा हैं यह समझकर, पत्नी तथा पुत्र का विरोध न मानकर गुरुपादय्या ने अविरत सतगुरु सेवा करते रहने का वर्णन किया है। मडिवाल स्वामीजी के दर्शन के लिए सिद्धारूढ़जी गरग गाँव जाने के पश्चात, वहाँ घटी अद्भुत घटनाओं का विवरण तैंतीसवे अध्याय में किया है। बड़े भाई ने सिद्धारूढ़जी को निवेद अर्पण करने के लिए मना करने के पश्चात, उन से प्रार्थना करके गले में फँदा डालकर जान देने के लिए तैयार हुए निरुपादप्पा को सिद्धनाथजी ने प्रकट होकर बचाकर, उसका निवेद स्वीकारने की सुरस कथा चौतीसवे अध्याय में बयान की है। भोले भक्त को ज्वर चढ़ाकर वह कुँवे में गिरने के पश्चात, सतगुरुजी ने उसे आत्मज्ञान प्रदान करके दर्शन देने की कथा पैंतीसवे अध्याय में दी है। छत्तीसवे अध्याय में, सतगुरुजी ने स्वयं परशुरामजी को रेल यात्रा के टिकट देकर, वह अनजान गाँव पहुँचने के उपरांत सिद्धप्पा नाम के मनुष्य के रूप में प्रकट होकर उसकी आवभगत करने का वृत्तांत दिया है। भक्त कृष्ण को बाँधकर रखने के उपरांत प्रभु श्रीराम प्रकट होने की तथा सिद्धारूढ़जी की जानकारी मिलने के पश्चात गोविंदानंदजी उन से मिलने की कथाएँ सैंतीसवे अध्याय में दी हैं। मृत्यु के व्दार पर होने वाले तुकप्पा के पुत्र हनुमंत ने सतगुरुजी से प्रार्थना करने के पश्चात, उन्होंने उसे पल भर में रोग मुक्त करने का विवरण अडतीसवे अध्याय में दिया है। सतगुरुजी की जानकारी मिलने के पश्चात ताईबाई उनसे मिलने के लिए आने का तथा सतगुरुजी ने कृपा दृष्टि से नलिनी को रोग मुक्त करने का वर्णन उनतालीसवे अध्याय में दिया है। चालीसवे अध्याय में, बटमार यात्रियों को लूटते समय, महा भयंकर रूप धारण करके सतगुरुजी ने उनकी रक्षा करने का वर्णन दिया है। हिरुबाई को यमदूत ले जाते समय सतगुरुजी ने उसे छुड़ाने की तथा छह महीनों के उपरांत वायुयान में बिठाकर उसे स्वस्थान ले जाने की कथाएँ इकतालीसवे अध्याय में दी हैं। बयालीसवे अध्याय में, भक्त शंकर का अभिमानरहित व्यवहार, नदी के प्रवाह में बहकर जाते समय सतगुरुजी ने उसकी की हुई रक्षा  तथा सतगुरुजी की कृपा से उसे आत्मज्ञान की प्राप्ति होने का विवरण दिया है। तैंतालीसवे अध्याय में, गुरुदेव ने संत गोंदवलेकर महाराज की सेवा करने की तथा ब्रह्मचैतन्यजी सिद्धनाथजी से मिलने के पश्चात वे संत

ज्ञानेश्वरजी का अवतार हैं ऐसा कहने की सुरस कहानियाँ वर्णित की हैं। चवालीसवे अध्याय में तम्मण्णशास्त्री को गुरुजी से दीक्षा मिलने के उपरांत उसने नामजप करने से प्रभु श्रीराम प्रकट होने से वह कृतार्थ होने का विवरण दिया है। नारायण की कन्या चंपूताई का ज्वर उतरवाकर, दुलहन और दुल्हे का विवाह संपन्न करवाने की कथा पैंतालीसवे अध्याय में दी है।

छियालीसवे अध्याय में, उणकल गाँव के भक्तों ने पकाया हुआ भोजन बैलगाड़ियों में लादकर सिद्धाश्रम लाने की तथा उणकल के लाखों भक्तों को अक्कलकोट शरणप्पा ने खाना खिलाने की कहानियाँ वर्णित की हैं। सैंतालीसवे अध्याय में, सुब्बय्याशास्त्रीजी ने शिवपुत्र के नाम से जन्म लेने की तथा वेदांत शास्त्र पढ़कर विव्दान होकर गुरु कृपा से आत्मज्ञान प्राप्त करने की कथाएँ दी हैं। अडतालीसवे अध्याय में, रुक्मिणी ने सिद्धनाथजी की जीवनी पढ़ने के उपरांत उसकी पिशाच बाधा नष्ट होने की तथा वह मृत होकर गिर पड़ने पर यतिवर्य ने आकर भभूति के प्रभाव से उसे जीवित करने का विवरण दिया है। उनचासवे अध्याय में, सतगुरुजी को विष मिश्रित भोजन खिलाने वाली महिला बुद्धि भ्रष्ट होकर मरने की तथा अत्यंत पीड़ा सहने के पश्चात सतगुरुजी की विष बाधा पूर्ण रूप से कम होने का वर्णन दिया है। पचासवे अध्याय में, चनमल्लप्पा को वैराग्य प्राप्त होने की, साँप से सतगुरुजी की रक्षा करने हेतु उसने साँप को हाथ से पकड़ते ही, साँप ने उसे दंश करने की तथा उसके पश्चात सतगुरुजी ने उसकी रक्षा करने की कहानियाँ दी हैं। इक्यावनवे अध्याय में, मठ में स्थित अन्य भक्तगण ज्वर पर उपचार करेंगे इस भय से भक्त खासगत जंगल जाने की, सतगुरुजी उसे खोजते हुए वन  जाने की तथा उसके वैराग्य की कथाएँ वर्णित की हैं। बावनवे अध्याय में, भक्त निर्वाणप्पा ने वासनाओं का विनाश किस प्रकार करना चाहिए, यह प्रश्न  पूछते ही सतगुरुजी ने उसे वासनाओं का पूर्ण रूप से विनाश करने वाले परम आत्मज्ञान का उपदेश करने की अद्‌भुत कहानी दी है। तिरपनवे अध्याय में, डूबने वाले अगिन बोट में बैठी हुई लक्ष्मी ने सतगुरुजी का ध्यान तथा प्रार्थना करते ही, पल भर में प्रकट होकर उन्होंने उसकी रक्षा करने की कथा वर्णित की है। चौवनवे अध्याय में, सतगुरुजी ने स्वयं अपने हाथ से रोटी तथा दाल का मिश्रण बनाने की, भगवान श्रीशिवजी

तथा देवी पार्वती में हुए संभाषण की, भोजन का मिश्रण खिलाकर कुष्ठ निवारण करने की और शिष्यों को शुद्ध जल पिलाने की मनोहर कहानियाँ दी हैं। पचपनवे अध्याय में, जिन भक्तों ने दीर्घकाल तक सतगुरुजी की सेवा की, ऐसे संत महात्माओं के नाम तथा उनका कार्य संक्षिप्त रूप में वर्णित किया है। जब मन प्रसन्न हो तब श्रोतागण यह जीवनी पढ़कर उसके अध्यायों में दिया हुआ तात्पर्य अगर मन में संगृहीत करेंगे, तो उन्हें विषयोपभोगों से मिलने वाले आनंद से श्रेष्ठ आनंद प्राप्त होगा।

इस ग्रंथ का पारायण (एक सप्ताह में पूर्ण ग्रंथ पढ़ना) करने की रीति आप को व्यवस्थित रूप से समझाता हूँ। प्रतिदिन आठ अध्याय, इस प्रकार पढ़ते हुए सातवे दिन ग्रंथ पढ़कर पूर्ण करें। सतगुरुजी के प्रेम से लथपथ यह ग्रंथ अगर भक्त श्रद्धा से पढ़ेगा, तो सतगुरुजी उसके सारी मनोरथ पूर्ण करेंगे तथा तत्काल उसपर कृपा करेंगे। सतगुरु कृपा कोई साधारण चीज़ नहीं, क्योंकि इस कृपा से भक्त के मन में होने वाली सारी आशाएँ, वासनाएँ नष्ट होकर, पल भर में वह त्रिभुवन में भी न समाए जाने वाला आत्मरूप देखता है। जिस ब्रह्म (चैतन्य) से माया के कारण यह जगत निर्माण हुआ, उस ब्रह्म में जब जीवात्मा एकरूप हो जाता है अथवा स्वयं ही ब्रह्म हो जाता है, उसी को "आत्मरूप देखना" ऐसा कहते है। इस प्रकार आत्मरूप देख सकने वाले आत्मज्ञानी मनुष्य को विषयोपभोगों से भरा हुआ यह जगत भी स्वयं का ही एक अंग है ऐसा प्रतीत होने के कारण, उसे विषयोपभोगों से कैसे सुख तथा दुख हो सकता है, यह आप ही बताईए। गुरुकृपा की महिमा अगाध है, जो यह ग्रंथ पढेगा, उसे ऐसी कृपा का लाभ होगा, जिससे उस मनुष्य को आत्मज्ञान प्रद बोध मिलेगा, इससे अधिक लाभ और कुछ भी नहीं हो सकता। अगर ग्रंथ पढ़कर इस प्रकार का लाभ होता होगा, तब क्षुल्लक लाभों के बारे में मैं क्यों बोलू? सारा देश ही अपने कब्जे में आने के पश्चात कौन एकाध गाँव माँगेगा? यह जीवनी पढ़ने के पश्चात विषयोपभोगों की प्राप्ति होगी, ऐसा कहते हुए मैं लज्जित हो रहा हूँ; क्योंकि अगर कोई कहे की राजा के पास घास के गट्ठर मिलते हैं, तो सभी हँसने लगेंगे। जिन से यह जगत उत्पन्न हुआ ऐसे सतगुरु महाराज, यह जीवनी पढ़ने से प्रसन्न होते हैं, तब उन से कुछ अच्छा (आध्यात्मिक दृष्टिकोण से)

माँगना चाहिए। यह जीवनी पढ़ने से विषयोपभोगों की प्राप्ति होगी इस प्रकार की फलदायकता मुझ से नहीं बतलाई जाती, इसलिए, मैं कहता हूँ की यह जीवनी पढ़ने वाले का मन शुद्ध होकर उस के मन में इच्छाएँ नहीं रहेगी। अस्तु। यहीं यह परम पवित्र ग्रंथ समाप्त हुआ। श्रोतागणों ने पूछा, "यह ग्रंथ किस ने लिखा?" उसपर मैंने कहा, "अर्थात, सतगुरु महाराज ने।" तब वे बोले, "अजी, ये सच है! परंतु लिखने के लिए कौन निमित्तकारण बना?" तब मैं कहता हूँ, "इस ग्रंथ को लिखने के लिए निमित्तकारण हुआ है शिवराम, जिसके पिताजी का नाम लक्ष्मण है तथा परम विरागी होने वाली पद्मावती यह उसकी माता है। यह जाति से गौड सारस्वत ब्राह्मण होकर, इस का गोत्र कौशिक है। इसने माता पिता के चरणों को वंदन करके सिद्धारूढ़ महाराजजी की सेवा की। इसका मूल गाँव मुक्तापूर होकर, फिलहाल वह हुबली शहर के सिद्धाश्रम में सतगुरुकृपा से रहता है। यह ग्रंथ, शकाब्द अठरासो चवालीस, दुंदुभी नाम संवत्सर, कार्तिक शुद्धपक्ष के षष्ठी के दिन गुरुवार को पूर्ण हुआ। सतगुरुजी तथा आप सभी सज्जनों को  वंदन करके तथा मंगलाचरण का उच्चारण करके, इस ग्रंथ का लेखन मैं पूर्ण कर रहा हूँ।

(श्लोक) ब्रह्मानंदं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिम्॥
व्दंव्दातीतं गगनसदृशं तत्वमस्यादि-लक्ष्यम्॥
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतम्॥
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्‌गुरुं तं नमामि॥

(अर्थ: ब्रह्मानंद की अनुभूति लेने वाले, श्रेष्ठ सुख देने वाले, केवल ज्ञान की मूर्ति होने वाले, व्दंव्द के परे (भेदरहित) होने वाले, अंबर के समान अमर्याद होने वाले, 'तत्वमसि' यही लक्ष्य होने वाले, सदैव निश्चल तथा शुद्ध होकर सभी प्राणियों को साक्षी रूप से देखने वाले, मन की वृत्तियों के परे होने वाले तथा त्रिगुणरहित होने वाले सतगुरुनाथजी, मैं आप को प्रणाम करता हूँ।)

अस्तु। जिसका श्रवण करने से सभी पाप भस्म हो जाते हैं, ऐसे इस श्री सिद्धारूढ़ कथामृत का मधुर सा यह छप्पनवाँ अध्याय श्री शिवदास श्री सिद्धारूढ़ स्वामीजी के चरणों में अर्पण करते हैं। सबका कल्याण हो।

॥ श्री गुरुसिद्धारूढ़चरणारविंदार्पणमस्तु ॥

## ॥आरती श्रीसिद्धारूढ़ कथामृत की॥

आरती उतारो कथामृत की। सिद्धनाथ के जीवनी की॥
सतगुरु भक्ति का है सागर। सद्भक्तों की कथाएँ सुंदर॥
कथा रत्न इस में मनमोहक। जो हैं अज्ञान तम निवारक॥
इस उदधी में हैं अविरत उठती। भक्ति प्रेम की लहरें उछलाती॥
प्रेमाश्रुओं के बूँद हैं बहते। मलीन चित्त प्रक्षाळित करते॥
बुद्धि की मथानी लेकर। भली बुरी वृत्तियों को बुलाकर॥
सारे मिलकर करते मंथन। तब करते ज्ञानामृत प्राशन॥
सतगुरु सेवा से कलिमल दहन। तब प्रकट होता है आत्मज्ञान॥
सतगुरु चरणों में मैं शरण। शिवदास की आस हो पूर्ण॥